# राग - भीमपलासी

जब काफी के मेल में, आरोहन रे ध त्यागा
तृतीय प्रहर दिन ग नि कोमल, मानत म स संवाद

संक्षिप्त परिचय :- इस राग का जन्म काफी थाट से माना गया है। इसमें ग नि कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते हैं। आरोह में रे ध स्वर वर्जित है और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं। अतः इसकी जाति- औडव - सम्पुर्ण है। वादी स्वर मध्यम तथा सम्वादी षड्ज है। इसे दिन के तीसरे प्रहर में गाते बजाते हैं।

आरोह - ऩि़ सा ग॒ म, प, ऩि सां ।
अवरोह - सां ऩि ध प, म प ग॒ म, ग॒ रे सा ।
पकड़ - ऩि़ सा म, म प ग॒ म, ग॒ रे सा ।

न्यास के स्वर - सा, ग॒, म और प
समप्रकृति राग - बागेश्री

## प्रारम्भिक आलाप

1) सा, ऩि़ सा म ग॒ रे सा, ऩि़ ध़ प़, प़ ऩि़ सा ऽ ग॒ रे सा ।

2) ऩि़ सा म, म प ग़ ऽ म, ग़ म प, ऩि़ ध प, ध म प ऽ ग़ ऽ म, सा ग़ म प, ग़ म ग़ रे सा, ऩि़ सा ग़ रे सा ।

3) ग़ म प, ग़ म प ऩि़ ध प, ऩि़ ध प, ध म प, ग़ म म प प ऩि़ ध प, धऽ म प ग़ ग़ म, ऩि़ सा म ऽ प ग़ म, प ग़ ऽ म ग़ रे सा, ऩि़ सा ग़ रे सा ।

4) ग़ म प ऩि़ ऽ प ऩि़ सां, प ऩि़ सां ग़ं रें सां, रें ऩि़ सां, ऩि़ ध प, ध प म प ग़ म, प ऩि़ सां ऽ ऩि़ ध प, म प ऩि़ ध प, प ध म प, ग़ म, ऩि़ सा म, म प ग़ मऽ ग़ रे सा, ऩि़ ध प ऩि़ सा ।

5) ग़ म प ऩि़ सां ऽऽऽ ऩि़ प ऩि़ सां, प ऩि़ सां ग़ं ऽ रें सां, मं ग़ं रें सां, रें ऩि़ सां, सां ऩि़ ध प, ऩि़ ध प, धऽ मऽ प, ग़ म, ऩि़ सा ग़ म प म प ग़ म, ग़ ऽ म ग़ रे सा, ऩि़ सा ग़ रे सा, ऩि़ सा ।

=

Scanned with CamScanner